स्वायत्तता और बहुजन स्वराज

गिरीश सहस्रबुद्धे

स्वायत्तता

स्वायत्तता यह कोई स्थिति नहीं है, बल्कि स्थितियों को बदलने की, नई स्थितियाँ निर्माण करने की, नई वस्तुओं का निर्माण करने की, अर्थात् सृजन की मनुष्य की क्षमता का स्रोत है. यह स्रोत सभी में एक सा है. समाज मनुष्य द्वारा सृजन की प्रक्रिया में अन्य मनुष्यों तथा प्रकृति के साथ होनेवाले संवाद और व्यवहार पर खड़ा है.

जिन समाजों में हर स्तर पर इस वास्तविकता की व्यवस्थित सार्वजनिक पहचान हो वे समाज स्वायत्त समाज हो सकते हैं. सार्वजनिक पहचान होने का अर्थ है हर व्यक्ति तथा हर सामाजिक इकाई की स्वायत्तता ही आपसी सामाजिक संबंधों को सबके लिए हितकारी और सहज बनाती है, इस समझ की सार्वजनिक मान्यता होना.

ऐसे समाज में व्यक्ति और समाज के बीच कोई ऐसा टकराव, जिसका कि कोई अंतर्गत हल न निकाला जा सके, बहुत दूर तक नहीं पनपता. यही बात उस समाज की किन्ही भी दो इकाइयों के बीच टकराव के बारे में भी लागू है. एक तरह से कह सकते हैं कि इन इकाइयों की स्वायत्तता का आदर करते हुए उनके परस्पर द्वंद्वों का हल निकालने के रास्तों की कल्पना वह समाज कर सकता है. इसके लिए उस समाज के लोगों को किसी बाहरी कारक या हस्तक्षेप की आवश्यकता महसूस नहीं होती.

स्वायत्त समाज बनते जाने की प्रक्रिया शायद ऐसे ही रास्तों की कल्पना और स्वीकार का सिलसिला है. यही उस समाज में नित्य नए निर्माण की प्रक्रिया है. ऐसी प्रक्रिया ही उस समाज की आंतरिक गति को सतत अंकित करती रहती है, और उसकी स्वायत्तता का प्रमाण देती है.

स्वराज

स्वराज एक व्यापक धारणा है जो हमारे समाज में परंपरा से चली आई है. कभी स्वधर्म के रूप में, कभी स्वदेशी के, तो कभी स्व-शासन के, तो कभी जिम्मेदारी बनाम अधिकार की कश्मकश के निराकरण की चर्चा में. एक तरह से कला-साहित्य, समाज, और आर्थिक-राजनीतिक क्षेत्रों में विचार का जामा स्वधर्म-स्वशासन-स्वदेशी-स्वराज का ही रहा. आनंद कुमारस्वामी जैसे कला-विचारकों ने स्वदेशी और स्वराज पर विस्तृत चिंतन किया. स्वतंत्रता संग्राम के साथ स्वराज की बात खुलकर चर्चा में आई. लोकमान्य तिलक ने इसे जन्मसिद्ध अधिकार माना, तो अरविंद घोष ने हमारे देश के पारंपरिक जीवन से इसे जोड़ा और इसके आध्यात्मिक पहलू पर भी ध्यान खींचा. गांधी जी ने तो अपनी पुस्तक 'हिन्द-स्वराज' में पश्चिमी देशों की सभ्यता पर तीखी मौलिक आलोचना कर स्वराज का सभ्यतागत अर्थ दुनिया के सामने प्रकट किया.

ज़ाहिर है स्वराज के अनेकों आयाम हैं और वर्तमान में भी हमें कई प्रकार से इसको समझना – स्वीकारना होगा. इसमें एक तरीका स्वायत्तता के दृष्टिकोण का भी है. इस दृष्टि से देखें तो स्वराज स्वायत्त

समाज की नित्य नये निर्माण की प्रक्रिया ही है, जो कि अपने आप में सामाजिक इकाइयों की स्वायत्तता को हानि पहुँचाये बिना उनके आपसी सम्बन्ध बनाते-बढ़ाते जाने की प्रक्रिया है. इस दृष्टि से स्वराज स्वायत्त इकाइयों की स्वायत्तता है. दूसरे शब्दों में कहें तो स्वराज हर स्वायत्त समाज का स्वभाव है.

बहुजन स्वराज

अगर मान भी लें कि स्वराज के चिंतन में स्वायत्तता की बात अहम है तो भी वर्तमान परिस्थितियों में बहुजन की अगुआई में स्वराज की स्थापना, या बहुजन स्वराज की कल्पना किस तरह से की जाय?

प्रस्थापित सामाजिक-राजनीतिक सोच बहुजन में ऐसी कोई पहल या ताकत नहीं देखती जो किसी भी सामाजिक परिवर्तन के लिए जरूरी है. इसलिए इस सोच की सिफारिश यह है कि बहुजन वर्तमान व्यवस्था में ही ताकत के स्थानों - आर्थिक, राजनीतिक - पर काबिज हों. अनुभव कहता है कि जो काबिज हो जाते हैं वे अपने समाज के नहीं रहते. उलटे जिनके पास ऐसी ताकत है वे बहुजन की स्वायत्तता को नष्ट करने का हर प्रयास करते साफ दिखाई देते हैं. स्वायत्त समाज और स्वराज के लिए ऐसी ताकत बेमानी ही नहीं, हानिकारक है. यह तो छल और कपट की ताकत है.

स्वराज की प्रेरणा तो समाज की, और उस समाज के हर व्यक्ति की अपनी स्वायत्त क्षमताओं को हरकत में लाने की सहज प्रवृत्ति से ही आती है. बहुजन समाज अपनी क्षमताओं में ही अपनी ताकत का इजहार कर सकता है. और कहीं नहीं. ये क्षमताऐं समाज की परंपरा में चलती आती हर किस्म की स्वायत्त निर्माण क्रियाओं से अवगत ज्ञान में निहित हैं. इस ज्ञान की अपनी प्रयोगशीलता है, अपना तर्क है और अपने मूल्य हैं, जो एक-दूसरे में समाये हुए हैं. समाज और प्रकृति की हर इकाई की स्वायत्तता का आदर इस ज्ञान की सीख है जिसका व्यावहारिक रूप न्याय, त्याग और भाईचारा के सामाजिक मूल्य हैं.

यह सच है कि पिछले ढाई-सौ वर्षों में विदेशी और घरेलू उपनिवेशवाद और विस्तारवाद द्वारा देश के स्वायत्त समाजों की भारी लूट-खसोट ने बहुजन समाज की हर प्रकार की हानि की है. आधुनिक समाज की हर बड़ी उपलब्धि की कहानी इसी लूट-खसोट की कहानी है. लेकिन सच यह भी है कि बहुजन ज्ञान में आज भी अहिंसा और भाईचारे के साथ समाज को टिकाए रखने की ताकत है. इसका अर्थ तो यह भी है कि बहुजन समाज के अंतर्गत हुए परिवर्तनों के वावजूद बहुजन ज्ञान का प्रकार कायम है.

बहुजन स्वराज की माँग यह है कि बहुजन समाज के जन-आन्दोलन बहुजन ज्ञान को अपनी वास्तविक और आतंरिक ताकत के रूप में पहचानें, इस ज्ञान के अलग अलग पहलू सारे समाज के सामने लाने का कार्य हो, और बहुजन ज्ञान के बल पर स्वराज निर्माण का दावा हो.